idiscoveri X.SEED FOUNDATION FOR LIFE

UNLEASH YOUR MIND®

Publication : Viraat Vaibhav

Region : New Delhi

Date : Dec 08, 2010

स्कूली शिक्षा में विकासपरक बदलाव लाने की पहल

डॉ. अब्दुल कलाम ने सभी श्रोताओं को अपने उस दृष्टिकोण से अवगत कराया जिसमें यह बताया गया है कि भारत को एक बौद्धिक महाशक्ति बनने के लिये किस तरह के नागरिकों की आवश्यकता है। इसके साथ ही उन्होंने बच्चों के शुरूआती वर्षों में उन्हें दिये जाने वाले मूल्यों, गुणों और व्यवहार से जुड़ी अपनी अपेक्षाओं से भी शिक्षकों को अवगत कराया। यह बात उन्होंने आईडिस्कवरी द्वारा आयोजित 'स्कूल ऑफ टूमॉरो' के दूसरे संस्करण के दौरान कही।

एक्सीड नामक नवीन शिक्षा पर आधारित एक वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन का हिस्सा है, में कई विचारकों और शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के तहत यह लोग उच्च गुणवत्ता युक्त और ऊर्जावान परिचर्चा में लीन हुए जिससे स्कूली शिक्षा में सकारात्मक बदलाव लाने का रास्ता साफ हो सके। एमआईटी स्लोआन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के प्रो. पीटर सेंज, शिक्षा और अभ्यास क्षेत्र में विश्व के प्रख्यात अनुसंधानविद् और हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रो.डेविड पर्किंस और प्रसिद्ध लेखक और पी एंड जी के पूर्व सीईओ गुरशरण दास ने हिस्सा लिया।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. डेविड पर्किंस ने कहा कि 'एक शिक्षक की तरह हम सभी ऐसी शिक्षा देना चाहते है जिसका महत्व हो, शिक्षा ऐसी हो जिसका छात्र की जिन्दगी में गहरा बदलाव आ सके और ऐसे में निश्चित रूप से एक छात्र जो भी पहली कक्षा से स्नातक स्तर पर सीखता है उसका खासा योगदान होता है लेकिन बावजूद इसके खासी बातों का कोई भी प्रभाव नही होता जबकि पुराने समय से हम वही सब कुछ पढ़ाते आ रहे है जो हमें पता है लेकिन आज के समय में हमें वह भी पढ़ाना होगा जो कि हमें नही पता है जिससे छात्रों को उन बातों और ज्ञान से भी अवगत कराया जा सके और उन्हें संवाद, शिक्षा, और सोचने के गुणों और व्यवहार से लैस किया जा सके ताकि वह 21वीं शताब्दी में सफल हो सकें। यही पर उन बातों को सिखाने के लिये अवसर और चुनौती दोनों ही विद्यमान,है जो न सिर्फ हमें पता ही है बल्कि नहीं भी पता है।'

अवसर पर गुरशरण दास ने कहा कि 'हालांकि हर बच्चे तक स्कूल की सुविधा पहुंचाने के लिये खासा विकास किया गया है फिर भी बच्चों को असल बेहतर शिक्षा प्रदान करने के मामले में भारत सरकार को अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। इस सम्मेलन की परियोजना कुछ इस तरह थी कि हर शहर में दो बेहतरीन विशेषज्ञों के पैनल बनाये गये जिसमें से एक शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों और दूसरा व्यवसाय और सरकारी नेतृत्व से जुड़े लोग थे। इन सभी ने स्कूली शिक्षा में लाये जा सकने वाले बदलावों और उससे जुड़े सूक्ष्म और वृहद ट्रेंड के बारे में चर्चा की। वहीं दूसरे पैनल, जिसने समाज की स्कूलों से अपेक्षाओं के उद्देश्य पर परिचर्चा की हुई।